रविंद्र नाथ ठाकुर

कविपरिचय:-

रवींद्रनाथ ठाकुर का जन्म 6 मई 1861 में बंगाल के एक संपन्न परिवार में हुआ था। वह नोबेल पुरस्कार पाने वाले प्रथम भारतीय थे।बैरिस्ट्री पढ़ने के लिए वह विदेश गए, परंतु परीक्षा दिए बिना वापस लौट आए। रविंद्र नाथ को प्रकृति से विशेष लगाव था। आपकी कविताओं में लोक संस्कृति का रंग मुखरित होता है। उन्होंने लगभग एक हज़ार कविताएं और दो हज़ार गीत लिखे। आपको संगीत, नृत्य व चित्रकला के प्रति विशेष प्रेम था, जिस कारण रविंद्र संगीत कला नाम से संगीत की एक अलग धारा निकली। आपने शांति निकेतन के नाम से एक शैक्षिक व सांस्कृतिक संस्था की स्थापना की।

आत्मत्राण

पाठपरिचय:-

आत्मत्राणकविता मूल रूप से बंगलाभाषा मेंलिखीगईथी। इसका हिंदी अनुवाद आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने किया है। कविता एक प्रार्थना है जो अन्य प्रार्थनाओं से अलग है। सभी प्रार्थनाओं में ईश्वर से माँगा जाता है, परंतु इस प्रार्थना में कहा गया है कि जीवन में आने वाली आपदाओं, संकटों हानि, लाभ में ईश्वर सहायता न करें,बल्कि प्रभु उसे संघर्ष करने की शक्ति दें, ताकि वह अपनी आपदाओं आदि पर अपने कर्म से विजय प्राप्त करें।

विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं

केवल इतना हो (करुणामय)

कभी न विपदा में पाऊँभय।

दुःख-ताप से व्यथित चित्त को न दो सांत्वना नहीं सही

पर इतना होवे(करुणामय)

दुख को मैं कर सकूँ सदा जय।

शब्दार्थ- विपदा- संकट, करुणामय- दया करने वाले प्रभु, दुःख-ताप -कष्ट की पीड़ा, व्यथित- दुखी,चित्त- ह्रदय, सांत्वना– ढाँढस,तसल्ली देना।

व्याख्या:-

कवि कहते हैंकि हे प्रभु! मुझ पर संकट आने पर आप मुझे बचाओ, ऐसा मैं नहीं चाहताहूँ।हे करुणामयप्रभु! मैं बस इतना चाहता हूँ कि मैं संकटों से डरूंनहीं।जब मेरा ह्रदय दुःख से पीड़ित होतो अगरआप मुझे तसल्ली नहीं देते तो कोई बात नहीं।हेकरुणामयप्रभु! बस इतना करना कि मैं अपने संकटों और कष्टों पर विजय प्राप्त कर लूँ। बस इतनी शक्ति मुझे देना।

भाषासौंदर्य:-

1) भाषा सरल खड़ी बोली
2) छंद मुक्त रचना
3) तत्सम शब्दों की प्रधानता जैसे विपदा, करुणामय,दुःख-ताप, व्यथित, चित्त, सांत्वना, आदि तत्सम शब्द
4) सकूँसदा अनुप्रास अलंकार
5) शांत रस, भक्ति भाव

कोई कहीं सहायक ना मिले

तो अपना बल पौरुष ना हिले;

हानिठठानी पड़े जगत्में लाभ अगर वंचना रही

तो भी मन में ना मानूँक्षय।।

मेरा त्राण करो अनुदिन तुम यह मेरी प्रार्थना नहीं

बस इतना होवे(करुणामय)

तरनेकीहोशक्तिअनामय।

मेराभारअगर लघु करके न दो सांत्वना नहीं सही।

केवल इतना रखना अनुनय-

वहन कर सकूँ इसको निर्भय।

शब्दार्थ :- बल पौरुष - कर्म करने की शक्ति, वंचना- धोखा,क्षय– हार,त्राण – मुक्ति, अनुदिन - हर दिन,तरने - पार उतरने, अनामय– स्वस्थ, लघु – कम, सांत्वना– तसल्ली, अनुनय – विनती,वहन – सहना, निर्भय - बिना डर के

व्याख्या:-

कविकहते हैं किजीवन में संकट आने पर कोई सहायता करने वाला ना मिले, तो कोई बात नहीं; पर मेरी कर्म करने की शक्तिकभीभी कम ना हो, क्योंकि कर्म करके संकट दूर किए जा सकते हैं। संसार में रहते हुए कर्म करने पर भी लाभ धोखा दे जाए तथा हानि उठानी पड़े, तब भीमेरा मन हार न माने। आप मुझे हर दिन संकटों से मुक्ति दिलाओ, मैं ऐसी प्रार्थना नहीं करता।हेकरुणामयप्रभु! बसइतनी कृपा करना कि मुझे इन संकटों से उबरने की शक्ति देना ताकि स्वस्थ मन से इन

संकटों से मुक्त हो सकूं। प्रभु! आप मेरे कष्ट कम करके मुझे तसल्ली नहीं देना चाहते, तो कोई बात नहीं; केवल इतनी विनती है कि कष्ट को बिना डरे सहन कर सकूँ।

भाषासौंदर्य:-

1) भाषा सरल खड़ी बोली
2) छंद मुक्त रचना
3) तत्सम शब्दों की प्रधानता बल पौरुष, वंचना, क्षय, त्राण,अनुदिन,में अनामय, सांत्वना,आदितत्सम शब्द
4) कोई कहीं अनुप्रास अलंकार

नतशिर होकर सुख के दिन में।

तवमुख पहचानूँ छिन छिन में

ददुः-रात्रि में करे वंचना मेरी जिस दिन निखिल मही

उस दिन ऐसा हो करुणामय

तुम पर करूँनहीं कुछ संशय।।

शब्दार्थ:- नत शिर- सिर झुकाकर, वंचना– धोखा दे, छिन- छिन- हर पल,निखिल मही- पूरी धरती (संसार), संशय–संदेह।

व्याख्याः-

कवि कहते हैंकि हे प्रभु! जब मेरे जीवन में सुख के दिन आएँ, तब मैं सिर झुकाकर प्रतिपल तुम्हें पहचानूँ,अर्थात् हर पल तुम्हें याद रखूँ। जब मेरे जीवन में दुःख रात बन कर आए तथा सारा संसार मुझे धोखा दे जाए, तब करुणामयप्रभु! इतनी कृपा करनाकि तब मैं तुम पर संदेह ना करूँ,अर्थात् तुम्हारे प्रति मेरी आस्था व विश्वास सदैव बना रहे।

भाषासौंदर्य:-

1) भाषा सरल खड़ी बोली।
2) छंद मुक्त रचना।
3) तत्सम शब्दों की प्रधानता –नतशिर, वंचना, निखिल, मही,संशयआदि तत्सम शब्द।
4) छिन-छिन पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न1)कवि किससे और क्या प्रार्थना कर रहा है?

उत्तर:- कवि ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है और कह रहा है किजीवन में जब भीसंकट या आपदाएँआएँ, तो प्रभु,आप मेरी रक्षा करें, ऐसा मैं नहीं चाहता; बल्कि अपने पुरुषार्थ के बल पर संकटों पर विजय प्राप्त करूँ। संसार में मुझे लाभ के स्थान पर हानि उठानी पड़े तथा मेरे दुखों को कम करो मैं ऐसा भी नहीं चाहता।मैं तो चाहता हूंकि मैं निडरता से इनका सामना करूँ।हे प्रभु! सुख मैं आपको भूलूं नहीं तथा दुःख में आप पर संदेह ना करूँ।

प्रश्न 2)विपदाओंसे मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं -कविइस पंक्ति के द्वारा क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर:- कवि कहते हैं किप्रभु! जीवन में आने वाले संकट में आप मुझे बचाएँ ऐसी मैं प्रार्थना नहीं करता। हे करुणामय प्रभु! मैं बस इतना चाहता हूँ कि अपने कर्म के द्वारा मैं संकटों का निडरता से सामना करूँएवं उन पर विजय प्राप्त करूँ।

प्रश्न3)कवि सहायक ना मिलने पर क्या प्रार्थना करता है?

उत्तर:- कविकहते हैं कि संकट के समय अगर कोई मेरी सहायता नहीं करता तो कोई बात नहीं; मुझे अपने पुरुषार्थ पर पूर्ण विश्वास है। मैं अपने पौरुष शक्ति के बल पर इन संकटों का निर्भयता से सामना करूँगा एवं उन पर विजय प्राप्त कर लूँगा।

प्रश्न 4) अंत में कवि क्या अनुनय करता है?**उत्तर**:- जैसे कि कहावत है-दुःख में सिमरन सब करे, सुख में करे न कोई, परंतु कवि ईश्वर से प्रार्थना करता है कि प्रभु सुख के दिनों में मैं आपको प्रतिपल याद करूँ एवं मस्तक नवाकर तुम्हें नमन करूँतथा जब मेरे जीवन में दुःख रूपी रात्रि आए तथा सारा संसार मुझे धोखा दे दे, तब हे करुणामयईश्वर! इतनी कृपा करना कि मैं तुम पर संदेहनकरूँ एवं मेरा विश्वास तुम पर सदा बना रहे।

प्रश्न 5) आत्मत्राण शीर्षक की सार्थकता कवि के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- आत्मत्राण का अर्थ है अपनी सुरक्षा स्वयं करना। कविता में कवि कहते हैं किजीवन में संकट, कष्ट, दुःख आदि आने पर प्रभु! मैं यह नहीं चाहता कि आप मेरी सहायता करें।करुणामयप्रभु! मैं तो यह चाहता हूँ कि मेरा पुरुषार्थ बना रहे,अर्थात् मुझ में कर्म करने की शक्ति सदा बनी रहे। मैं कर्म करके अपने संकट, कष्ट, दुःख स्वयं दूर कर लूंगा तथा मेरा तुम पर विश्वास सदा बना रहे। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि कविता का शीर्षक सार्थक है।

प्रश्न 6 अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए आप प्रार्थना के अतिरिक्त और क्या-क्या प्रयास करते हैं?

उत्तर:- अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि प्रभु हमारे सारे काम सिद्ध करना, जीवन में हमारा स्वास्थ्य अच्छा रहे, हम खूब तरक्की करें; अर्थात् हम ईश्वर से सुख-समृद्धि को पाने की प्रार्थना करते हैं। पर यह भी सत्य है किकेवल प्रार्थना करने से सारे कामतो नहीं होते। कार्य सिद्ध करने के लिए पुरुषार्थ अर्थात् कर्म करने की आवश्यकता होती है, क्योंकि ईश्वर उनका ही साथ देता है, जो कर्म करके असंभव को संभव कर सकते हैं।

प्रश्न 7) क्या कविकीयह प्रार्थना आपको अन्य प्रार्थना-गीतों से अलग लगती है? यदि हाँ, तो कैसे?

उत्तर:- यह प्रार्थना अन्य प्रार्थना-गीतों से अलग है। सामान्य प्रार्थना-गीतों में ईश्वर से कहा जाता है– प्रभु! हमारे सारे दुख दूर करो तथा हमें सुख समृद्धि दो,हमें स्वास्थ्य दो तथा ईश्वर को माता पिता बंधु कहा जाता है, अर्थात् ईश्वर से हम बिना कर्म किए सब कुछ मांगते हैं। आत्मत्राण भी प्रार्थना-गीत है। इसमें प्रार्थना की गई है कि प्रभु जब मुझ पर संकट आए, जब कोई मेरी सहायता नकरे तथा जीवन में लाभ भी मुझे धोखा दे जाए, तो करुणामयप्रभु! बस मुझे इतनी शक्ति देना कि मेरा पौरुष-बल कम न हो, अर्थात्मैं कर्म करके अपने संकटोंको दूर कर सकूँ।

प्रश्न 8)आत्मत्राणकविता में चारों ओर से दुःखों से घिरने पर कवि परमेश्वर में विश्वास करते हुए भी अपने आप से क्या अपेक्षा करता है?

उत्तर:-कविकहते हैं -जब मैं चारों तरफ से दुःख से घिर जाऊँ तथा सारा संसार मुझे धोखा दे दे, तब भी मेरा विश्वास आप पर बना रहे,अर्थात् आपके अस्तित्व के प्रति मेरे मन में कोई संदेह उत्पन्न ना हो।

प्रश्न 9) आत्मत्राण कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहते हैं?

उत्तर:- कविता के द्वारा कवि यह संदेश देना चाहते हैं किप्रभु से कभी अपने दुःखों में कष्टों को हरने की प्रार्थना नहीं करनी चाहिए, बल्कि अपने पुरुषार्थ बलसे इन पर विजय प्राप्त करनी चाहिए तथा प्रभु के किसी भी कार्य पर संदेह नहीं करना चाहिए।

प्रश्न 10)आत्मत्राणकविता के आधार पर कवि की उन विशेषताओं का वर्णन कीजिए जो जीवन उपयोगी शिक्षा देती हैं

अथवा

“आत्मत्राण कविता से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर:- आत्मत्राण कविता हमें प्रेरणा देने वाली कविताहै, क्योंकि इसके माध्यम से कवि की कुछ प्रेरणादायीविशेषताएँ सामने आ रही हैं :-

1) संकटों से डरना नहीं चाहिए, बल्कि उन पर विजय प्राप्त करनी चाहिए।
2) संकटों में अपने पुरुषार्थ पर विश्वास करना चाहिए।
3) जीवन में जब हानि मिले तथा लाभ धोखा देदे, तब भी हार नहीं माननी चाहिए।
4) कविका कहना है कि संकटों से मेरा उद्धार करो, ऐसा मैं नहीं चाहता; बल्कि चाहता हूँकिनिडरता से इनका वहन करूँ।
5) सुख के दिनों में भी आपको याद रखूँ।
6) दुख के दिनों में भी ईश्वर पर विश्वास बनाए रखूँअर्थात् कवि ईश्वर से केवल इतना चाहते हैं किजब वे जीवन के लिए संघर्ष करें, ईश्वर उनकी सहायता करें।

* * * * *